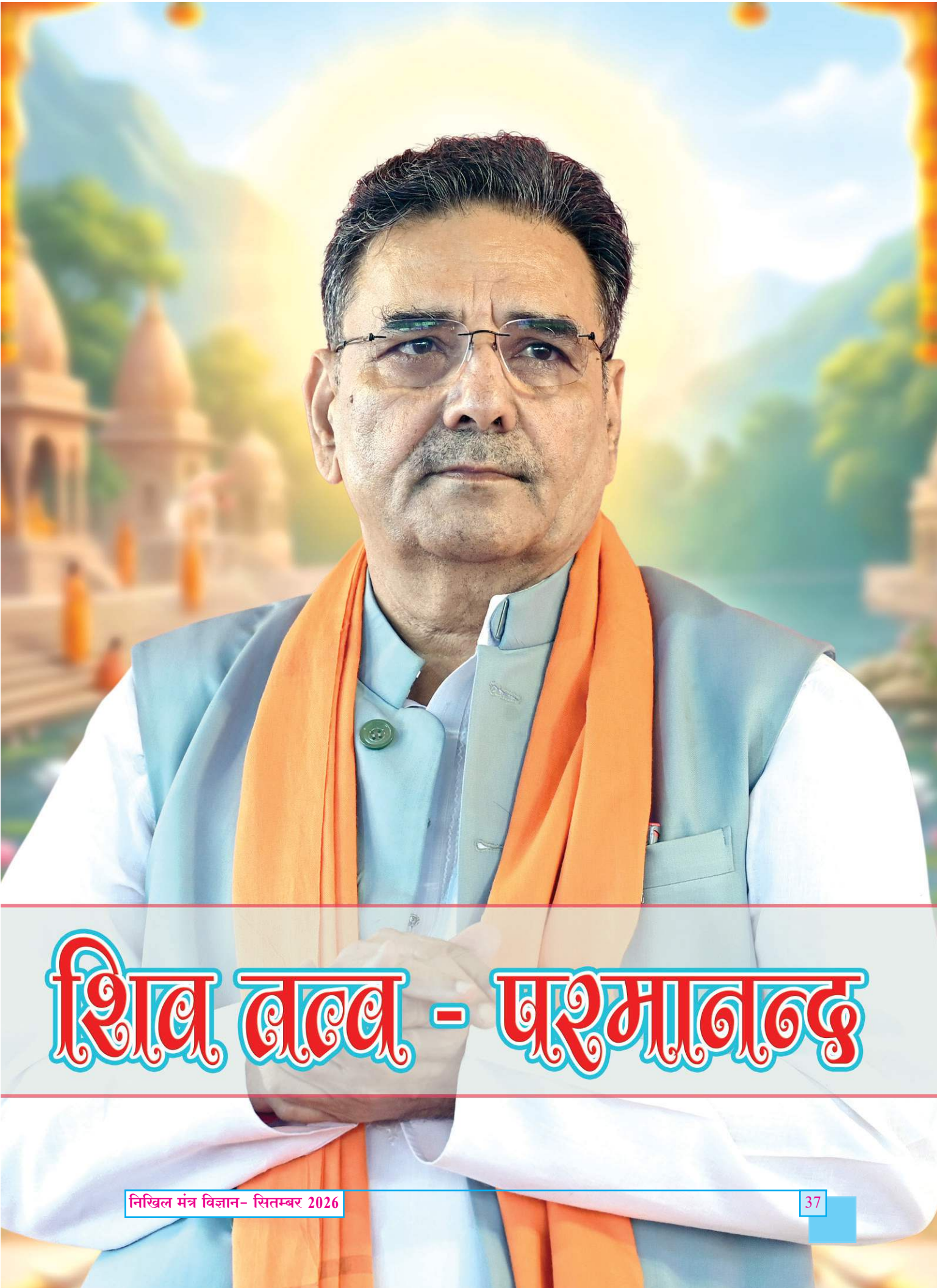


शिव तत्व - परमानन्द



शताब्दी का सबसे विशिष्ट महाकुंभ जिसे प्रयागराज में सम्पन्न किया। उस महाकुंभ में त्रिवेणी संगम में सूर्य को अर्घ्य देते हुए और शिवरात्रि को पारदेश्वर शिव का अभिषेक सम्पन्न करने के साथ सद्गुरुदेव ने शिव शक्ति और अमृत घट के बारे में सारगर्भित प्रवचन दिया। उसी प्रवचन के प्रथम दिन के कुछ विशिष्ट अंश –

प्रयाग संगम तीर्थ महाकुंभ का अवसर और गुरु-शिष्य का समागम इससे विशिष्ट शिवरात्रि महोत्सव और क्या हो सकता है?

मेरे जीवन का तो यह स्वर्णिम अवसर है जो मुझे इस जीवन में, इस कुंभ में प्राप्त हुआ है। हमारा शिविर महाशिवरात्रि शिविर है और दो दिन तक हम केवल और केवल प्रेम रस की ही चर्चा करेंगें अभिषेक भी करेंगे, शिव का भी और अपने स्वयं का भी।

सबसे पहले शिव स्तुति –

शंकराचार्य **'नमः शिवाय'** पंचाक्षरी स्तोत्र में शिव प्रार्थना करते हुए कहते है –

नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय, भस्माङ्गरागाय महेश्वराय ।

नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय, तस्मै न काराय नमः शिवाय ।।

हे शिव! आप नागों को धारण किये हुए है, त्रिनेत्र वाले है, भस्म लेपन किये हुए है, महेश्वर है। नित्याय अर्थात् नित्य-नित्य है, शाश्वत् है। शुद्धाय अर्थात् परम विशुद्ध है। दिगम्बर है अर्थात् आडम्बर रहित है। आपको मेरा प्रणाम है।

क्यों करते है हम शिव स्तुति, क्यों करते है हम अभिषेक, क्यों चढ़ाते है जल, दूध इत्यादि? क्योंकि हमारे शिव ही रसों के अधिष्ठाता है हम रस प्राप्ति के लिये ही शिव अभिषेक करते है।

श्लोक है –

जटा-टवी-गलज्-जल-प्रवाह-पावित-स्थले,
गलेऽव-लम्ब्यत् लम्बितां भुजङ्ग तुङ्ग मालिकाम् ।
डमड्-डमड्-डमड्-डमन् निनाद वड्-डमर्वयं,
चकार चण्ड ताण्डवं तनोतु नः शिवः शिवम् ।।

जटा रूपी वन से निकलती हुई गंगा की धाराएं, जिनके कण्ठ प्रदेश को प्रक्षालित करती हैं, गले में सर्पों की विशाल माला को धारण करके, डमरू के डम-डम ध्वनि के साथ ताण्डव नृत्य करते हुए शिव हम उपासकों का कल्याण करें।



तो शिव ही तो रसों के अधिष्ठाता है जिनकी जटाओं में गंगा है।



संसार में ऐसा कोई व्यक्ति नहीं होगा जिसे रस नहीं चाहिये। बिना रस के सूखा-सूखा जीवन, आनन्द से भी सूखा है। क्या आप अपने हृदय पर हाथ रख कर कह सकते हो कि आपको अपने जीवन में कितना रस मिल रहा है?

अभी आपमें से कितने लोगों ने कुंभ में डुबकी लगाई है। अब डुबकी लगाई है तो कुछ तो सोचा ही होगा। आमतौर पर यह सोचते है कि डुबकी लगायेंगे तो पाप कटेंगे जीवन के दुःख समाप्त होंगे, बिगड़ी बन जायेगी और ऐसा होता भी है यह ब्रह्म सत्य है।

क्योंकि जब कुंभ स्थान अर्थात् अमृत कुण्ड में डुबकी लगाने से आपके बिगड़े काम क्यों बन जाते है क्योंकि उस समय हमारे भीतर अमृत रूपी रस का प्रवाह प्रारम्भ हो जाता है।

देखों भाई! जीवन को सजाने संवारने और आनन्द युक्त बनाने के लिये रस चाहिये। कहीं पिकनिक पर जाते हो और वहां खाना बनाना हुआ तो अनाज को गीला करते हो और सूखी लकड़ी खोजते हो। भोजन बनाने में भी गीला दाल-भात भलीभांति पकता है और सूखी लकड़ी शीघ्रता से जलती है।

कुंभ में आपने डुबकी लगाकर अपने मन को रस से सिक्त किया है क्योंकि रस के बिना जीवन नीरस है और नीरस जीवन में आनन्द कैसे?

तो जीवन का सबसे महत्वपूर्ण तत्व है रस। जब यह मन रस से युक्त होता है तो प्रसन्न रहता है। आप उत्साह में रहते हो। ऐसा लगता है कि सारा संसार मेरे वश में है।

इतना समझ लो कि जीवन में जो कुछ भी महत्वपूर्ण है वह रस है या रस का प्रतीक है।

यौवन का अर्थ रस है।

प्रेम का अर्थ रस है।

श्रद्धा-भक्ति का अर्थ रस है।

सौन्दर्य का अर्थ रस है।

यही तो चाहिये जीवन में - यौवन, प्रेम, भक्ति, शक्ति, सौन्दर्य।

इसीलिये कहा गया है कि -

प्रेम नदी में नाव चले, बिना पतवार, बिन पानी।
वहे खिवया पार लगावे जांकि प्रीत स्यानी।।

तो भाई शिव प्रेम में, प्रभु प्रेम में जिनकी प्रीत चलती है, जिनकी प्रीत होती है उसकी नाव अवश्य किनारे पर पहुंचती है। तूफानों के बीच भी सुरक्षित रहती है।

मैं रस की बात कर रहा था। रस के आदि स्रोत है महादेव जिन्हें रसेश्वर कहा गया है। इसीलिये हम शिव अभिषेक करते है क्योंकि शिव हमें रस से युक्त करते है और रस की उत्पत्ति सबमें अलग-अलग स्तर पर होती है।

भोजन ग्रहण किया उसका रस शरीर में प्रवाहित हुआ, शरीर स्वस्थ हुआ। प्रार्थना सम्पन्न की, उसका रस मस्तिष्क में पहुंचा।

प्रेम किया चाहे वह संतान से हो या और किसी से, उसका रस हृदय में पहुंचा।

और प्रार्थना करते हुए क्या भाव निकलना चाहिये?

त्वदीयं वस्तु गोविन्द तुम्यमेव समर्पये

आपने यही दिया है आपको ही समर्पित।

शिव हमें रस से युक्त करते है इसलिये हम शिव को रस प्रदान करते है।

बिना रस के तो भोजन भी स्वादिष्ट नहीं लगता। बिना रस से युक्त संगीत भजन भी नहीं शोभता।

बिना रस से युक्त हुए श्रृंगार अर्थात् बिना श्रृंगार के वधु भी नहीं शोभती।

बिना रस से युक्त हुए अर्थात् बिना सजावट के मकान भी नहीं शोभता वह घर नहीं बनता।

ठीक ऐसे ही बिना रस से आपूरित हुए मन भी प्रसन्न नहीं होता है।

हम शिव का अभिषेक करते है - दूध, दही, घृत, मधु और जल से। गंगाजल चढ़ाते है शिव पर । कल करेंगे अभिषेक, गंगा जल से शिव का।

थोड़ी विचित्र बात हो गई ना? अब शिव की जटाओं में ही गंगा है और गंगाजल से शिव का अभिषेक क्यों? आकाश मार्ग से शिव की जटाओं से निकलकर ही तो गंगा हमारे पास आई है। फिर गंगा जल से शिव का अभिषेक क्यों?

वही बात जो मैंने अभी कही थी -



त्वदीयं वस्तु गोविन्द तुम्यमेव समर्पये

शिव हमें रस से सिंचते है इसलिये हम शिव का अभिषेक करते है।

आप आये हो प्रयाग और तीन नदियों का मिलन है - गंगा, यमुना और सरस्वती। प्रयाग में ही तीनों नदियां मिलती है गंगा और युमना दृश्यमान है, सरस्वती लुप्त है।

क्यों नहीं दिखाई दे रहीं है सरस्वती क्योंकि हमारे जीवन में सरसता लुप्त हो गई है।

जहां सरसता है वहां सरस्वती है और सरसता ज्ञान से आती है।

ज्ञान के बिना भक्ति, प्रेम, सौन्दर्य केवल बाहरी दिखावा है।

ज्ञानयुक्त यौवन, प्रेम, भक्ति, सौन्दर्य गंगा, युमना, सरस्वती के मिलन का स्वरूप है।

सरसता तो ब्रह्मा में भी नहीं है। चाहे उन्होंने सृष्टि का निर्माण किया। और सरस्वती उनसे अलग हो गई। ब्रह्मा का स्वरूप कैसा बताया गया है?



सब देवताओं का स्वरूप युवा और सुन्दर होता है लेकिन ब्रह्मा का चित्रण हमेशा वृद्ध के रूप में बताया गया है। बड़ी-बड़ी दाढ़ी, ऐसा क्यों है? मेरी बात को ध्यान से समझना, जो बात में कह रहा हूं वह और कहीं नहीं सुनी होगी।

ब्रह्मा है अतीत का स्वरूप, विष्णु है वर्तमान का स्वरूप और शिव है भविष्य का स्वरूप, काल का स्वरूप, समय का स्वरूप।

ब्रह्मा की उत्पत्ति कहां से हुई, विष्णु के नाभि कमल से। आध्यात्मिक अर्थ क्या है? किसी का भी जन्म जब और चाहे जहां हुआ हो वह वर्तमान से ही उत्पन्न होता है क्योंकि अतीत के सारे दुःख, तकलीफ हम वर्तमान में याद करते है।

यह तो वैसी ही बात हो गई कि किसी घाव को, अतीत के घाव को ठीक होने ही नहीं दिया जाये और रोज उसे खुरेद-खुरेद कर ताजा कर दिया जाये।

बहुत कम लोग है जो अपने अतीत से प्रसन्न है क्योंकि ज्यादातर लोगों को अपने अतीत से बहुत तकलीफ है। वह उनके स्मृति पटल पर अंकित हो गया है और बार-बार उभर कर सामने आता है।

अब विष्णु है वर्तमान के देव, क्यों कहा गया है उन्हें वर्तमान के देव। ये जो दस अवतार है - **मत्स्य अवतार, कूर्म अवतार, वराह अवतार, नृसिंह अवतार, वामन अवतार, परशुराम अवतार, राम अवतार, कृष्ण अवतार, बुद्ध अवतार, कल्कि** अवतार हमारी सृष्टि की कथा बताते है - वर्तमान का स्वरूप है,

ऐसा है, इसका भी एक पौराणिक आख्यान है कि शिव की काशी नगरी में शिव और शिवा दोनों आनन्द से रहते थे इसीलिये काशी को आनन्द वन कहा गया है। एक काल में आनन्द वन में रमण करते हुए शिव और शिवा के मन में यह इच्छा हुई कि सृष्टि संचालन का महान् भार किसी अन्य पुरुष को सौंप देना चाहिये। जिससे हम लोग काशी में आनन्द पूर्वक निवास कर सके।

ऐसा विचार कर शिव ने अपने वाम भाग के दसवें अंग पर अमृत का सिंचन किया जिससे एक पुरुष उत्पन्न हुआ।

वह अमृत तत्व से युक्त शांत स्वभाव का था और उमसें सत्वगुण की अधिकता थी और शिव और शिवा ने उसे नाम दिया विष्णु क्योंकि विष्णु यत्र-तत्र-सर्वत्र है।

तो यह सृष्टि भगवान विष्णु की सृष्टि हुई ताकि शिव ओर शिवा आनन्द पूर्वक रह सके ओर पालन का काम अर्थात् संसार चलाने का काम विष्णु जी करें। इसलिये विष्णु जी शेषनाग पर सोते है। जिसके 100 फन है, शेषनाग।

संसार के प्रणियों की सौ प्रकार की मांगे है और विष्णु को बैलेन्स बनाना पड़ता है।

कोई-कोई मुझे कहता है कि ब्रह्मा, विष्णु, महेश अलग-अलग है।

आप शिव आरती में क्या गाते हो?

एकानन चतुरानन पंचानन राजे।
हंसासन गरूड़ासन वृषवाहन साजे।।

ॐ जय शिव ॐकारा...

दोऊ भुज चारु चतुर्भुज दशभुज अति सोहै।
तीनों रूप निरखते त्रिभुवन-जग मोहे।।

ॐ जय शिव ॐकारा...

तो भाई! ब्रह्मा, विष्णु, महेश शिव का ही स्वरूप है क्योंकि शिव शाश्वत् है, शिव अवतार नहीं लेते। विष्णु बार-बार अवतार लेते है। जगत का पालन करने के लिये और ब्रह्मा एक बार जगत की रचना कर देते है आगे का काम विष्णु का और शिव का।

अब हमारे शिव तो अलख निरंजन वे तो विष को अपने कण्ठ में दबाकर सबको अमृत प्रदान करते है। मृत्यु भय से मुक्ति प्रदान करते है। महाकाल है इसीलिये महामृत्युंजय अमृत मंत्र का सब जाप करते है।

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।

सबको चाहिये सुगन्ध, पुष्टि, बंधनों से मुक्ति ऐसा कोई है क्या जिसका अमृत नहीं चाहिये।

अमृत सबको चाहिये, शायद इसीलिये भारतवर्ष में सबसे अधिक शिव मन्दिर है। जहां शिव शिवलिंग रूप में स्थापित है और सबसे विशेष बात क्या है?

आप रुद्राष्टाध्यायी के मंत्रों से रूद को अभिषेक करते है। उसमें एक महत्वपूर्ण मंत्र है, जो रुद्र महिमा को विस्तार से बताता है -

च प्रवाह्याय च नमः कि गुंग शिलाय च क्षयणाय च नमः।
कपर्दिने च पुलस्तये च नमः इरिण्याय च प्रथध्याय च।।



जो रुद्रदेव नदियों के रेत में, प्रवाहमान जल में, कंकड़-पत्थर आदि में, शिला आदि में सर्वत्र विद्यमान हैं, जो सीप-शंख आदि में विद्यमान हैं, जो पूर्णजल में अन्तर्यामी रूप से निहित हैं, जो भूमि में उत्पन्न तृण, गुल्म आदि में विद्यमान हैं, जो बहु सेवित मार्गों में भी विद्यमान है, उन सर्वत्र व्यापी रुद्र को मैं प्रणाम करता हूं।

तो हमारे रूद्र तो सर्वत्र विद्यमान है। इसका सीधा सादा अर्थ है कि पूरे मनुष्य का जीवन और शरीर रुद्र स्वरूप है। इस रुद्र स्वरूप शरीर में जो सुगन्धित पुष्टिवर्द्धक है मनुष्य उसमें अपनी खोपड़ी से कुछ जोड़तोड़ करता रहता है। सीधा सरल सहज जीवन अच्छा नहीं लगता।

जीवन का कौन सा काल कैसा है? इस पर बार-बार विचार करते रहते हो। तीन ही काल है आपके जीवन में - भूतकाल-वर्तमान काल और भविष्य काल। तीनों के स्वामी महाकाल ही है।



अब विचित्र बात क्या है? भूतकाल अतीत के प्रति आप थोड़े से दुःखी होते हो और सोचते हो कि काश उसमें मुझे सहयोग दिया होता, काश! उस समय मैंने यह गलती नहीं की होती और उस कारण वर्तमान के लिये थोड़े अनमने रहते हो क्योंकि भूतकाल को बहुत हावी कर दिया है। लेकिन एक बात है आप सबको अपने भविष्य के बारे में बड़ी जिज्ञासा होती है।

जब मैं वर्तमान के बारे में पूछता हूं, तो कहते हो बस गुरुजी कट रही है, चल रही है जिन्दगी। अब वर्तमान काल विष्णु का काल है और विष्णु हम सबका पालन करते है। पालन तो वर्तमान में ही होगा ना, इसलिये वर्तमान विष्णु का काल है।

ब्रह्मा जगत के निर्माता है और निर्माण हमेशा अतीत में रहता है। इसलिये अतीत के प्रति श्रद्धा से भरे नहीं रहा जा सकता क्योंकि वह तो बीत गया, अब उसमें कुछ सुधार हो नहीं सकता।

शिव है हमारे महाकाल, महाकाल का अर्थ है? काल से ऊपर। जो काल से ऊपर है, काल से महान् है उसे ही महाकाल कहा गया है। तो काल का सबसे महत्वपूर्ण रूप आपके सामने जो अभी तक आया नहीं है उसके प्रति रस रहता है।

तो भविष्यकाल के प्रति और भविष्य को जानने का रस आप सब के मन में बहुत अधिक है।

भविष्य का विचार कर रस मिलता है और जहां रस नहीं मिलता है वहां आपका मन नहीं झुकता है।

आप किसी अस्पताल में चले जाओं जहां आपका कोई परिवारिक सदस्य, मित्र, रिश्तेदार, जान-पहचान वाला भर्ती है तो आप कितने दुःखी हो जाते हो। एकदम परेशान, हैरान रहते हो जबकि वहां काम करने वाले डॉक्टर नर्स को देखों, वे निर्विकार भाव से इलाज करते रहते है। पर आप तो अपने मरीज को देखकर निर्विकार नहीं रह सकते क्योंकि आपके भाव जुड़े है।

भाव अर्थात् रस।

जहां रस नहीं है वहां भाव भी नहीं है और जिसमें भाव नहीं हो उसके प्रति श्रद्धा भी नहीं पनपती है।

थोड़ा विस्तार से समझाता हूं।

सबसे अधिक रस किसमें है? बात थोड़ी विचित्र हैं।

प्रणय, प्रेम में। शिव और शक्ति की जोड़ी आदर्श है। दोनों नार्थ पॉल और साउथ पॉल की तरह अलग-अलग है पर उनका प्रेम विशिष्ट है।

आज भी कन्याएं सोलह सोमवार का व्रत करती है कि उसे शिव जैसा पति मिले, गौरी पूजन करती है।

क्यों चाहिये शिव जैसा वर? शिव जी के तो घर भी नहीं है। पार्वती है राजकुमारी, शिव है संन्यासी। फिर भी दोनों का प्रेम अमर है क्योंकि शिव शक्ति अर्थात् पार्वती के प्रति दण्डवत् है।

कैसी विचित्र बात है? कि लक्ष्मी विष्णु के चरण दबाती है, सीता अग्नि परीक्षा देती, राधा विरह गीत गाती है और हमारे शिव पार्वती के अधीन है।

इसीलिये हर स्त्री को शिव जैसा पति चाहिये। जिससे उसका गृहस्थ जीवन सुखमय हो।

सुखी गृहस्थी का क्या रहस्य है? एक कहानी सुनों –

एक बार एक बगीचे में एक विशाल वृक्ष की छाया में 85 वर्षीय रामप्रसाद जी बैठे थे। कुछ युवकों ने पूछा कि काका आप इस उम्र में भी इतने स्फूर्तिवान और स्वस्थ कैसे है? आप नियमित रूप से यहां आते हो कभी बीमार भी नहीं हुए।

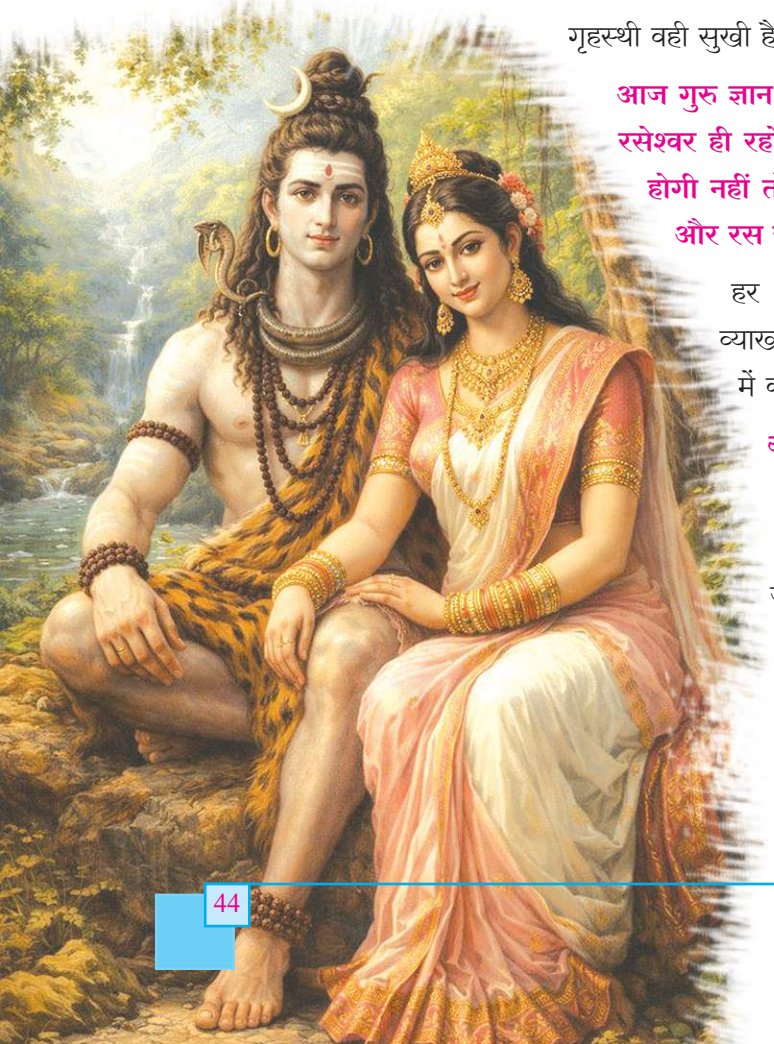
रामप्रसाद काका मुस्कुराये और कहा कि बेटा यह कहानी मेरे शादी के पहले दिन की है। मैं और तेरी काकी की शादी हुई, उस रात तेरी काकी के साथ एक अनूठा समझोता किया। कैसा समझोता?

हमने तय किया कि जब भीहमारे बीच कोई विवाद या झगड़ा होगा और जो भी गलत होगा उसे 5 किमी पैदल चलना पड़ेगा। बस वो दिन है और आज का दिन है और रोज मैं 5 किमी सैर पर निकलता हूं।

लड़के लोग हंसे और काकी? काकी तो 60 साल में आवश्यक काम के बिना घर से निकलती ही नहीं। यही मेरे स्वस्थ का राज है।

फिर बोले कि वास्तव में ये मेरे पत्नी की दूर दर्शिता थी कि उन्होंने जानबूझ कर मुझे स्वस्थ रखने का यह तरीका निकाला क्योंकि वह जानती थी कि मैं थोड़ा जिद्दी हूं और गलत बात पर भी बहस कर जीतना चाहता हूं क्योंकि मुझे समझ में आ गया था कि काकी गलती करती ही नहीं है, और मुझे रोज 5 किमी चलना पड़ता है।

देखों एक छोटी सी समझदारी जीवन को खुशहाल और स्वस्थ बना सकती है।



गृहस्थी वही सुखी है जहां पत्नी चला रही है क्योंकि वह शक्ति है भाई।

आज गुरु ज्ञान दे रहा हूं। यदि शक्ति के सम्मुख नतमस्तक रहोगे तो रसेश्वर ही रहोंगे, रस से आपूरित ही रहोगे। हर जगह आपकी पूछ होगी नहीं तो एकांकी रह जाओंगे। मन की घुटन बढ़ती ही रहेगी और रस सूखता ही रहेगा।

हर महीने गुरु गीता के श्लोक लिखता हूं, और उनकी व्याख्या भी लिखता हूं। क्या कहा जाता है – गुरु और शिव में कोई भेद नहीं है।

यः शिवः स गुरुः प्रोक्तो यो गुरुः स शिवः स्मृतः।
शिवरूपं गुरुं ध्यायेत् गुरुरूपं शिवं स्मरेत।।

क्या सीधा अर्थ है जो शिव है वहीं गुरु कह गये है और जो गुरु है वह शिव माने गये है। **इसीलिये गुरु को शिव रूप में ध्यान करना चाहिए और शिव को गुरु रूप में स्मरण करना चाहिये।**

इस कुंभ में, प्रयागराज में शिवरात्रि के पीछे मेरा प्रयोजन क्या है? प्रयोजन है कि आपके जीवन में अमृत रस बहे। यह त्रिवेणी स्थल है और कुंभ वह माध्यम है, जिसके द्वारा अमृत को हम अपने अन्दर लेते है।

यथा कुम्भो जलपूर्णस्तथा देहो रसैर्युतः

जैसे घड़ा जल से भरा होता है वैसे ही हमारा कुंभरूपी शरीर रसों से युक्त है।

देखों भाई! शरीर तो काल के अधीन है, धीरे-धीरे काल के मुख में प्रवेश कर रहा है और मिट्टी के कुंभ की भांति कभी भी टूट सकता है। पर उसके अन्दर निवास करने वाली आत्मा समय की सीमा से परे है। वह अविनाशी है, वह शिव है लेकिन हमें उसका ज्ञान उस समय तक नहीं होता है जब तक गुरु हमारी दृष्टि शिव की और हमारी आत्मा की और नहीं मोड़ते।

जब भी कोई शिष्य गुरु के पास आता है तो उसके मन में तीन विचार होते है, तीन प्रकार की कामनाएं होती है। इन तीन कामनाओं में सब संसार की कामनाएं आ जाती है।

हे गुरुदेव!

असतो मा सद्गमय

असत्य (अस्थायी) से सत्य (शाश्वत) की ओर ले चलो।

तमसो मा ज्योतिर्गमय

अंधकार (अज्ञान) से प्रकाश (ज्ञान) की ओर ले चलो।

मृत्योर्मा अमृतं गमय

मृत्यु (नश्वरता) से अमरत्व (मोक्ष) की ओर ले चलो।

इस प्रयाग राज में महाशिवरात्रि का चयन इन तीनों उद्देश्यों को पूरा करता है।

जीवन का असत्य क्या है? असत्य है रस से विहीन हो जाना। इसीलिये जीवन में उदासीनता, थकावट, वृद्धावस्था का भाव।

50 के होत-होते समझते हो कि अब क्या होगा? इसका कारण है रस सूख रहा है। बच्चों को भी देखों, बड़ों को भी देखों सब कहते है कि बोर हो गया हूं। समाज में विखराव का कारण ही बोरीयत है।

छोटे-छोटे बच्चे कहते है मैं बोर हो गया हूं। बोरीयत अर्थात् रस सूख रहा है। अब रस का स्रोत तो है शिव, रस के ईश्वर है शिव।

कहते है प्रयाग में सरस्वती सूख गई है। ये प्रतीक है कि हमारे जीवन में रस सूख रहा है, इसलिये हम प्रयाग में शिवरात्रि मना रहे है क्योंकि शिव ही रसेश्वर है, शिव ही ज्ञान प्रदाता है और हम रसों के द्वारा शिव का अभिषेक कर पुनः अपने जीवन में रस और ज्ञान प्राप्त करना चाहते है।

जहां ज्ञान रूपी सरस्वती है वहां रस सूख ही नहीं सकता, सदैव याद रखना।





अब दूसरी बात *तमसो मा ज्योतिर्गमय...* सीधा अर्थ यही हुआ गुरु अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाते है।

रोज तो सूर्य उदय होता है, प्रकाश होता है। पर जीवन के अंधकार क्या है?

एक ऐसी मानसिक स्थिति है जहां मनुष्य को जीवन का सही मार्ग नहीं दिखाई देता है और आत्मविश्वास की कमी और निराशा के घने बादल मन पर छा जाते है जैसे अंधेरी रात में मार्ग दिखाई नहीं देता वैसे ही निराशा में आगे का मार्ग नहीं दिखाई देता। जीवन के प्रति उत्साह और जीवन्तता खो जाती है।

मनुष्य अपने लक्ष्यों और सपनों से दूर होता जाता है और भीतर ही भीतर एक खालीपन अनुभव करता है। सम्बन्धों में दूरियां बढ़ने लगती है। व्यक्ति अपनों से भी कटने लगता है, एकांकीपन का शिकार हो जाता है उसे लगता है कि कोई मेरा है ही नहीं।

देखों, आज गुरु की बात ध्यान से सुनना।

यह अंधकार स्थाई नहीं है। जैसे सूर्योदय के प्रकाश में अंधेरा छट जाता है वैसे ही आत्मज्ञान, विवेक और सकारात्मक दृष्टिकोण से जीवन में फिर से प्रकाश आ जाता है। आत्मज्ञान के पश्चात् विवेक और सकारात्मक दृष्टिकोण आता है।

तो भाई जीवन के अंधकार को दूर करने में सबसे प्रमुख भूमिका आत्मज्ञान की है और आत्मज्ञान का अर्थ क्या है बहुत सरल है।

अपने मन के गलियारों में प्रवेश करना, अपने साथ समय व्यतीत करना और सारा ज्ञान हमारे मन में छुपा हुआ है। बस ये ज्ञान अज्ञान के आवरण तले दबा हुआ है।

जो भी हम नया-नया जानते है, मालूम होता है वह वास्तव में अविष्कार है और आपको बार-बार अविष्कार करना है।

आप नया अविष्कार कर सकते है। मन से अज्ञान को दूर हटाने, आपके द्वारा किया गया अविष्कार है। आपने स्वयं किया ना, इसलिये यह अविष्कार है। तब आपका ज्ञान आपके सामने स्पष्ट रूप से आ जायेगा।

एक बात है, मन पर किसका नियन्त्रण है।

मेरी मानों तो मन पर तो नियन्त्रण रसेश्वर शिव का ही है।

हमारा मन ही सबसे अधिक शक्तिशाली है और सबसे अधिक कमजोर भी है। इसीलिये मन के विषय में कहते है -

मन के हारे हार है, मन के जीते जीत।

एक कथा मुझे याद आ रही है। पहले पूरी सुनना। एक लड़का था विवेक बहुत प्रतिभाशाली, हर समय एक बैचेनी रहती। वह हर समय किसी न किसी दौड़ में लगा रहता, अच्छे अंक प्राप्त हो। सब प्रतियोगिताओं में भी जीत हो। हर समय दूसरों से आगे निकलने की जिद्द रहती।

एक दिन व अपने कॉलेज में प्रथम स्थान पाने के लिये दिन-रात पढ़ाई में जुटा रहता था। उसके भी एक गुरु थे।

गुरु होंगे तो बुद्धिमान अवश्य होंगे।

उन्होंने पूछ लिया - विवेक क्या बात है, हर समय परेशान रहते हो? बोला गुरुजी मैं बहुत सफलता प्राप्त करना चाहता हूं। जीवन के हर क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ बनना चाहता हूं।

गुरुजी ने कहा ये तो बहुत अच्छी बात है। गुरु जी ने कहा ठीक है, मुझे यह बताओं गंगा को सबसे पवित्र क्यों कहा जाता है?

अब विवेक ने जो पढ़ा था वही जवाब दे दिया। गुरुजी, गंगा पापों के धो देती है।

गुरुजी ने कहा ऐसी बात नहीं है, गंगा सबसे पवित्र इसलिये है क्योंकि वह निरन्तर बहती रहती है।

अपने मार्ग में आने वाली हर बाधा को पार करती है। किसी से युद्ध नहीं करती।

वह अपनी गति से चलती है और किसी से ईर्ष्यावश प्रतिस्पर्धा भी नहीं करती।

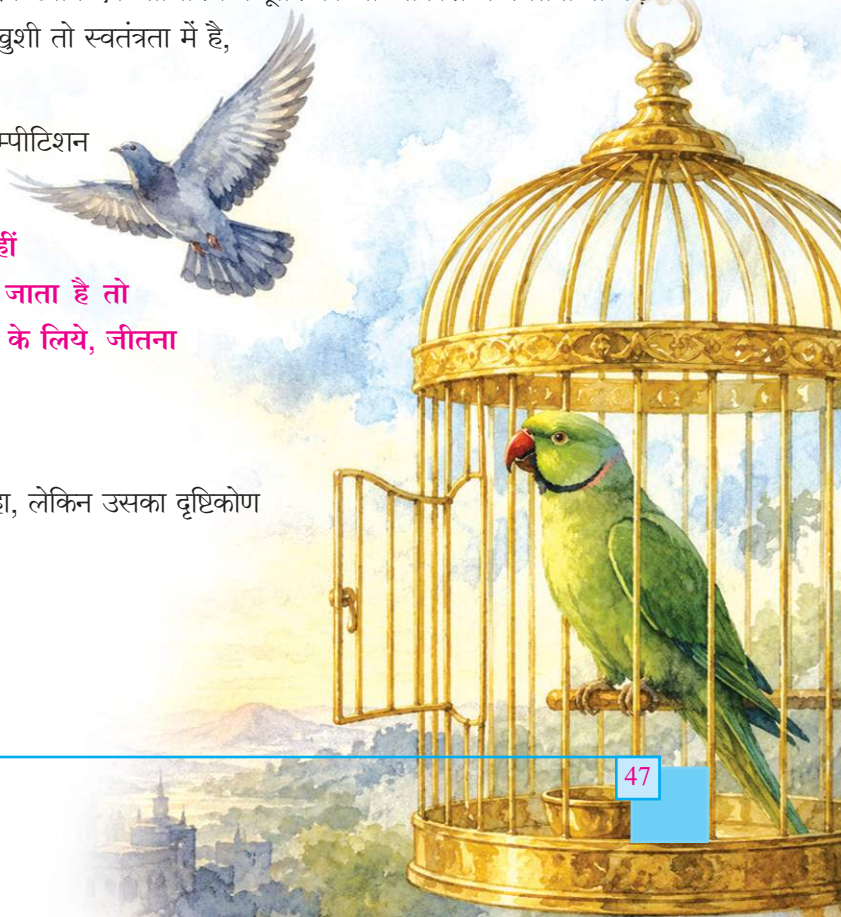
पूरी बात समझ में नहीं आई विवेक को, तो गुरुजी ने कहा कि बेटा तुम्हारे मन में बहुत अशांति है। यह अशांति ही माया का स्वरूप है।

तुम हर समय किसी न किसी चीज को पाने के लिये दौड़ में लगे रहते हो। पर क्या तुम्हें मालूम है तुम कुछ महत्वपूर्ण खो रहे हो।

बड़ा आश्चर्य हुआ, मैं क्या खो रहा हू?

गुरु ने कहा कि तुम हमेशा भविष्य की चिन्ता में डूबे रहते हो। इस कारण तुम्हारा वर्तमान बीत जाता है और जब तुम दूसरों से निरन्तर आगे निकलने की सोचते हो तो वास्तव में तुम स्वयं अपने आपको पीछे छोड़ देते हो।

एक नई समझ विवेक को आई। तो गुरु ने कहा, मेरी बात सुनों। एक तोता था जो सोने के पिंजरे में रहता। सब सुख-सुविधा थी लेकिन वह खुश नहीं था। एक दिन उसने एक साधारण कबूतर को जो आकाश में स्वतंत्रा से उड़ रहा था, उसे देखा तब समझ में आया कि सच्ची खुशी तो स्वतंत्रता में है, सोने के पिंजरे में नहीं है।



विवेक ने पूछा कि तो क्या हम जिन्दगी में कम्पीटिशन करें ही नहीं?

गुरु जी ने कहा कि देखों कम्पीटिशन बुरा नहीं है लेकिन जब यह कम्पीटिशन लोभ में बदल जाता है तो विनाशकारी हो जाता है। तब आप केवल जीतने के लिये, जीतना चाहते हो। पर वास्तव में हार जाते हो।

सच्ची जीत तो अपने मन को जीतने में है।

उसको यह बात समझ में आई। पढ़ाई करता रहा, लेकिन उसका दृष्टिकोण बदल गया।

अब वह सीखने के लिये पढ़ रहा था ना केवल अंक पाने के लिये। अपने साथियों की भी मदद करने लगा और इस प्रक्रिया में उसे बहुत कुछ सीखने का मिला। परीक्षा आई उसने अपना सर्वश्रेष्ठ किया। इस बार परिणाम की चिन्ता नहीं थी। सच बात क्या है उसे नम्बर इस बार और अधिक आये। गुरुजी के पास अपना परीक्षा परिणाम लेकर गया। गुरु जी ने आशीर्वाद दिया।

गुरुजी ने पूछा - अब कैसा महसूस कर रहे हो?

बोला, अब मैं समझ गया हूं। **पहले मैं हर चीज को पाना चाहता था और मैं उसमें खो गया था।**

अब मैं हर पल को सुख पूर्वक जीना चाहता हूं यह सीखा है कि सच्ची जीत बाहर नहीं भीतर है।

जब आप स्वयं प्रसन्न होते है, आपका मन प्रसन्न होता है। यदि आपका मन प्रसन्न नहीं हुआ? तो हर जीत अधूरी है और जब मन को जीत लेते हो तो छोटी-मोटी हार भी एक सीख बन जाती है।

मेरी बात ध्यान से सुनना, जीवन कम्पीटिशन नहीं है, जीवन है यात्रा और इस यात्रा में सबसे महत्वपूर्ण है। मन की शांति, मन की प्रसन्नता, मन में आनन्द भाव और वह आपके स्वयं के हाथों में है।

तो इस हमारी जीवन यात्रा में सबसे महत्वपूर्ण है मन की शांति। कैसे हो मन की शांति? ***मृत्योर्मा अमृतं गमय*** तीसरा सूत्र। कल जब हम रुद्राभिषेक करेंगे तो **तन्मे मनः शिव संकल्पमस्तु** शब्द बार-बार आयेगा।

रुद्राष्टाध्यायी के पहले अध्याय का आठवां मंत्र है -

येनेदं भूतं भुवनं भविष्यत् परि गृहीत ममृतेन सर्वम्।
येन यज्ञस् ता यते सप्त होता तन्मे मनः शिव संकल्प मस्तु।।

हे शिव मेरा मन अमृतत्व को प्राप्त करे। यह मन ही जो अमृतत्व को प्राप्त करता है वह भूत-भविष्य-वर्तमान काल के सभी पदार्थों को ग्रहण करता है। यह मन ही सात होता वाले मन पांच कमेन्द्रियां, बुद्धि और आत्मा रूपी वाले जीवन यज्ञ को विस्तृत करता है।

मेरा मन भी अमृतवान हो, जिस प्रकार हे शिव आप अमृतधारी हो वैसे ही मेरा मन शिव संकल्पमय हो। शुभ कार्यों में प्रवृतहो।

बहुत गंभीर बात है। जीवन में सबसे महत्वपूर्ण तत्व अमृत तत्व की प्राप्ति जो हमें ***मृत्योर्मा अमृतं गमय...*** की ओर प्रवृत्त करती है वह संकल्प शिव संकल्प है।



बार-बार कहा गया है - कि मेरा मन मंगलकारी, शुभ और सकारात्मक संकल्पों से भरा हो। यह सिद्ध करता है कि शिव का हमारे मन पर नियन्त्रण है।

आज आप अपने मन पर हाथ रखकर, हृदय पर हाथ रखकर अवश्य विचार करना कि आप किस प्रकार का संकल्प लेते है और उन संकल्पों की पूर्णता के लिये किस प्रकार कार्य करते है?

उद्घोषणा कर रहा हूं, जिसके मन में **शिव संकल्पमस्तु** नहीं है वह मन विकल्पों से भरा हुआ है और जो मन विकल्पों से भरा हुआ होता है वह अपने जीवन में कभी भी सुख शांति और संतोष प्राप्त नहीं करता है।

गुरु शिष्य मिलन का तीसरा कारण यही है। ***मृत्योर्मा अमृतं गमय...*** जो व्यक्ति शिव तत्व को अपने भीतर धारण करता है वह मंगलमय हो जाता है। जीवन को मंगलमय बनाने के लिये ही तो शिष्य गुरु के पास आता है और गुरु उसके मन में **'शिव संकल्प मस्तु'** का बार-बार आह्वान करते है।

शिव तत्व गुरु का पथ है। इसलिये गुरु को भी अमृत प्रदाता कहा गया है, शिव कहा गया है। शिव भी अमृत प्रदाता है महामृत्युंजय है। ***मृत्योर्मा अमृतं गमय...*** पथ पर ले जाने वाले है।

महाशिवरात्रि महान् क्यों है? यह अमृत की रात्रि है। उस रात अमृत वर्षा होती है क्योंकि उस रात्रि में शिव और शक्ति में एक दूसरे का वरण किया था।

इस बात को बहुत गंभीरता से समझों। शिव ने शक्ति से विवाह किया।

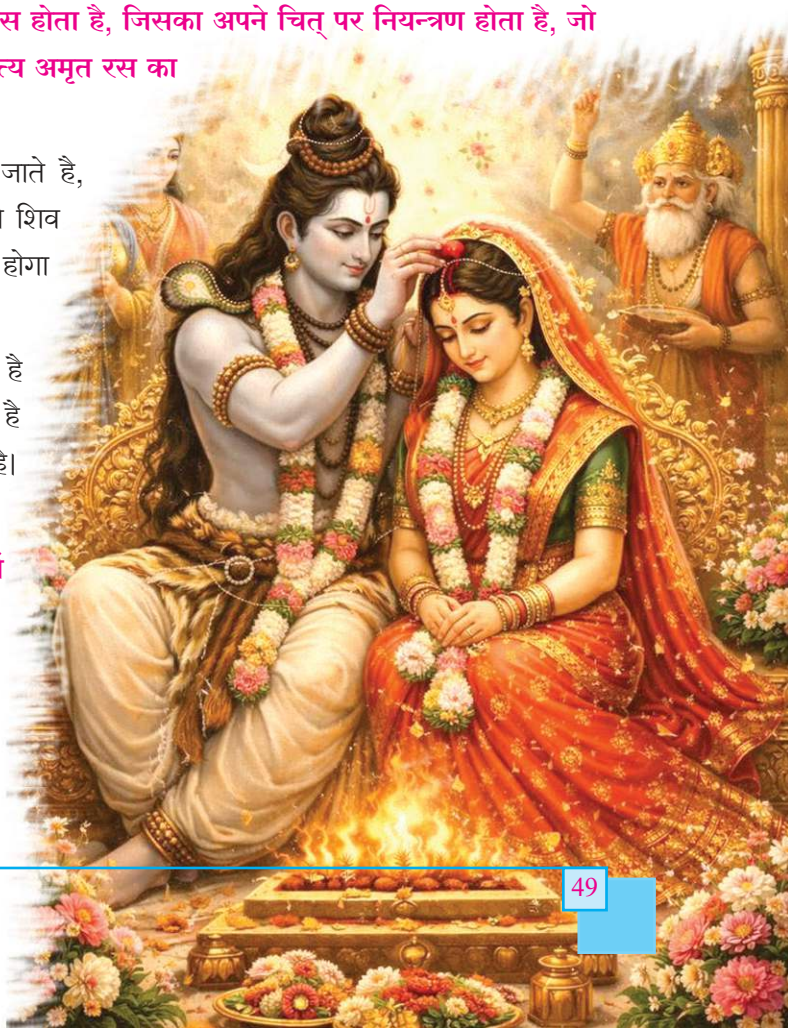
शक्ति को हम कहते है ऊर्जा, ऐनर्जी। तो आपके शरीर रूपी कुंभ में जो ऐनर्जी, ऊर्जा का कारण है वह अमृत, वह है आत्मा।

बार-बार मैं आत्मज्ञान की बात कह रहा हूं। सबकुछ आपके भीतर है। गुरु उसे जाग्रत करते है, जैसे अमृत पीने से व्यक्ति अमर हो जाता है वैसे ही आत्मज्ञान से व्यक्ति जीवन चक्र में क्रियाशील रहते हुए भी मुक्त रहता है।

तो यह हमारी आत्मा जो शिव का स्वरूप है - सद्चित्त आनन्द स्वरूप है। इसका स्वभाव शाश्वत् आनन्द है जो अमृत के समान है।

आनन्द ही तो हर व्यक्ति अपने जीवन में चाहता है पर आनन्द किसे प्राप्त होता है?

जो सत्चित् होता है, जिसके भीतर सत्य का निवास होता है, जिसका अपने चित् पर नियन्त्रण होता है, जो अपने भीतर शिव को स्थापित करता है वह नित्य-नित्य अमृत रस का आस्वादन करता है।



कहते है ना बिना शक्ति के शिव भी निस्तेज हो जाते है, स्पन्दनहीन हो जाते है। तो हमारी शरीर रूपी कुंभ भी शिव रूपी आत्मा से युक्त नहीं हुआ तो उसमें स्पन्दन नहीं होगा अर्थात् आनन्द नहीं होगा।

मनुष्य को सौन्दर्य, प्रेम, माधुर्य आत्मा से ही आता है और हर प्राणी को सर्वाधिक प्रेम अपनी आत्मा से ही है इसलिये प्रत्येक प्राणी में प्राण रक्षा का स्वभाविक गुण है। कोई भी प्राणी मृत्यु को प्राप्त नहीं होना चाहता है,

हां वह अपने जीवन में बार-बार आने वाले बंधनों से मुक्त होना चाहता है।

और वेद स्तुति गाते है कि शिव महामृत्युंजय है। वेद कहते है हे प्राणी मृत्यु भय से मुक्त रह। सदैव और सदैव त्र्यम्बक की स्तुति कर।

त्र्यम्बक अर्थात् तीन नेत्रों वाले, त्र्यम्बक अर्थात् भूत-वर्तमान-भविष्य के अधिपति।

त्र्यम्बक अर्थात् आकाश, धरती, पाताल के अधिपति। इस रूप में सम्पूर्ण सृष्टि में शिव की ही सत्ता है। शिव ही सब प्राणियों में अमृत का संचालन करते है। इसीलिये

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।

को स्वतंत्रता का मंत्र कहा गया है, पुष्टि, सुगन्ध और मुक्ति का मंत्र कहा गया है। यही प्रयाग में होता है।

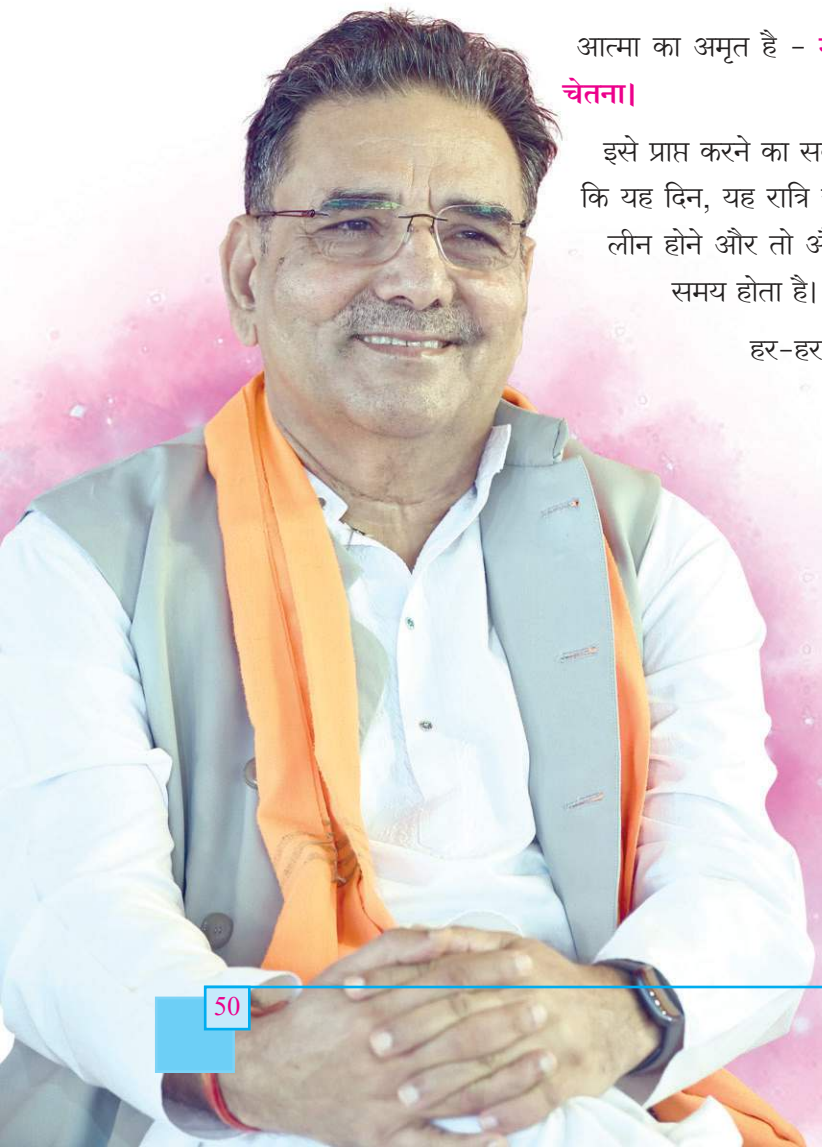
महान् तीर्थराज प्रयाग जहां, गंगा, यमुना, सरस्वती का मिलन होता है अर्थात् सत्य, रज और तम का मिलन होता है, वहां अमृत प्रवाह होता है।

सरस्वती सत्य का स्वरूप, गंगा रज का स्वरूप, यमुना तम का स्वरूप और इन तीनों विशेषताओं से युक्त तीन नदियों के मिलन से अमृत की प्राप्ति होती है।

और प्रयाग में शिवरात्रि तो सोने में सुहागे के समान है क्योंकि शिवरात्रि स्वयं में अमृत दिवस है।

शिवरात्रि पर्व शरीर में ऊर्जा को संतुलित करने और चैतन्य शक्ति को जाग्रत करने के लिये श्रेष्ठतम् अवसर पर्व, मुहूर्त माना गया है। इस दिन ग्रहों की स्थिति भी इस प्रकार से होती है कि ध्यान, साधना और अभिषेक करने से शरीर में ऊर्जा संचारित होती है। ऊर्जा संचारित होने का अर्थ है अमृत तत्व की प्राप्ति।

महाशिवरात्रि है आत्मा का अमृत।



आत्मा का अमृत है - **मोक्ष, ऊर्जा और ज्ञान। स्वतंत्रता शक्ति और ज्ञान चेतना।**

इसे प्राप्त करने का सर्वोत्तम अवसर है - महाशिवरात्रि। इतना समझ लो कि यह दिन, यह रात्रि संसारिक मोह, माया से ऊपर उठकर शिव तत्व में लीन होने और तो और परम शांति और आनन्द की अनुभूति करने का समय होता है।

हर-हर महादेव...

परम पूज्य गुरुदेव नन्द किशोर जी श्रीमाली

(महाशिवरात्रि साधना महोत्सव,
प्रयागराज - 2025)